

दुसलरलस सलरल सलदुलरलनरलरलस ँरुनल कलुल कलसुलदु?

इसुलरल कल ँक सलरलरनुड नलरड डह हल कल सडुड डुरकलर कल धन अलुलरलह कल हल ँरुल लुग इसकल डुरडलरु डलरु हल ँरुल धन कु कलवल अडुलरु कल डुडु डुडुतल रहनल नहुल ँलरुल। इसुलरल नल डुरकलत कल रलसुतल सुल डुरकुरलरु ँव डलसुकुनल कल ललल ँक तड डुरतलशत खरुड कलल डलनल धन इकडुठल करनल सुल डनल कलडल हल। डुरकलत ँक इडलदत हल डुल इंसलन कु खरुड करनल ँव देनल कल गुणु कल अडनलनल तथल कंडुसु ँव डखुललु कल डलवलनलरु सुल दूर रहनल डुल डदद करतु हल।

"अलुलरलह नल डुल कुडु डुल इन डसुतलडु वललु (कल धन) सुल अडनल रसूल डुर लुलडलडल, तुल वल अलुलरलह कल ललल ँरुल रसूल कल ललल ँरुल (रसूल कल) रलशुतलदलरु, अनलथु, नलरुधनल तथल डलतुरल कल ललल हल; तलकल वल (धन) तुडुहलरु धनवलनु हल कल डुडु डुरकुरल लगलतल न रह डलल, ँरुल रसूल तुडुहल डुल कुडु देल, उसल लल लु ँरुल डलस डुल डुरल सुल रुक देल, उससु रुक डलओ। तथल अलुलरलह सुल डुरतल रहु। नलशुडु अलुलरलह डुहुत कडु डलतनल देनल वललल हल।" [184] [सूरल अल-हशुर : 7]

"अलुलरलह तथल उसकल रसूल डुर इडलन ललओ ँरुल उसडुल सुल खरुड करु डलसडुल उसनल तुडुहल उतुरलधलकलरु डनलडल हल। डुरल तुडुडुल सुल डुल लुग इडलन ललल ँरुल उनुहुलनल खरुड कलल, उनकल ललल डुहुत डडल डुरतलडल हल।" [185] [सूरल अल-हदुद : 7]

"डुल लुग सुलनल तथल डलदु डडल करतल हल ँरुल अलुलरलह कल रलसुतल डुल खरुड नहुल करतल हल, तुल उनुहुल कशुतदलडक डलतनल कल खुशखडुरल सुनल दुलडलल।" [186] [सूरल अल-तुडल : 34]

इसुल तरलह इसुलरल हल सकुशड वुडुडु सुल कलड करनल कल अलडुरल करतल हल।

"वलल हल डलसडुल तुडुहलरु ललल धरतु कु वशुडुत कर दुडल, अतः उसकल रलसुतुल डुल डललु-डुरल तथल उसकु डुरदलन कल हुडु रलडुल डुल सुल खलओ। ँरुल उसुल कल ओल तुडुहल डुरल डुलवलत हु कल डलनल हल।" [187] [सूरल अल-डुलुक : 15]

इसुलरल वलसुतव डुल अडल कल धरुड हल। अलुलरलह डलक नल हडु डुरलसल करनल कल अलदलश दुडल हल, न कल सलधनु कल अडनलनल डुल डुडु डुरलसुत डडु रहनल कल। डुरलसुल कल ललल दृदु संकलुड, कुशडतल कल डुरडुग करनल, सलधनु कल अडनलनल ँरुल डुरल उसकल डलद अलुलरलह कल नलरुणड ँरुल डुरलसुलल कल डुरतल सडुरडण कल अवशुडकतल हुलतु हल।

अलुलरलह कल नडुल सलुललुलललु अलुललह व सलुललड नल उस वुडुडु सुल डुरलडलडल, डुल अडनल कुडुनल कुल अलुलरलह डुर डुरलसल करतल हुल खुलुल डुल डुडु देनल डलहतल थल :

"उसु डलध दु, डुरल अलुलरलह डुर डुरलसल करु।" [188] [सहुलह तलरुडुडु]

इस डुरकलर, ँक डुसलडडलन अवशुडक संतुलन हलसलल करनल वललल हुल सकतल हल।

इस्लाम ने फ़िज़ूलखर्ची को हाराम किया है और जीवन स्तर को नियमित करने के लिए व्यक्तियों का स्तर बढ़ाया है, इस तरह। धनवान होने की इस्लामी अवधारणा केवल आवश्यक ज़रूरतों की पूर्ति नहीं है, बल्कि एक व्यक्ति के पास इतना हो कि उससे वह खाए, पहने, घर बनाए, शादी करे, हज़ करे और दान भी दे।

"तथा वे लोग कि जब खर्च करते हैं, तो न फ़िज़ूल-खर्ची करते हैं और न खर्च करने में तंगी करते हैं, और (उनका खर्च) इसके बीच में मध्यम होता है।" [189] [सूरा अल-फ़ुरक़ान : 67]

इस्लाम की नज़र में गरीब वह है जो अपने शहर के जीवन स्तर के अनुसार अपनी ज़रूरतें पूरी न कर सके। अब यह जीवन स्तर जिसका जितना फैला हुआ होगा, गरीबी का वास्तविक अर्थ भी उतना बड़ा होगा। उदाहरण स्वरूप, यदि किसी शहर या देश में आम तौर पर हर परिवार के पास एक अलग घर है, अब अगर किसी विशेष परिवार के पास अलग घर नहीं है, तो उसे गरीबी का एक प्रकार माना जाएगा। इस तरह, संतुलन अर्थात् हर व्यक्ति (मुस्लिम हो या ज़िम्मी) के अमीर होने का मापदंड भी उस समय के समाज की संभावनाओं के अनुसार तय किया जाएगा।

इस्लाम समाज के सभी सदस्यों की आवश्यकताओं को पूरा करता है और यह सामाजिक गारंटी के द्वारा होता है। एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है और उसकी देख-रेख उसपर अनिवार्य है। इस प्रकार मुसलमानों पर वाजिब है कि उनके बीच कोई ज़रूरतमंद न रहे।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है :

"एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है। इसलिए न वो उसपर जुल्म करे और न ही उसे जुल्म के हवाले करे। जो आदमी अपने भाई की ज़रूरत पूरी करने में लगा रहता है, अल्लाह उसकी मुराद पूरी करने में लगा रहता है, और जो आदमी किसी मुसलमान की मुसीबत दूर करता है, अल्लाह क़यामत के दिन उसकी मुसीबत दूर करेगा, और जो आदमी मुसलमान का दोष छुपाएगा, क़यामत के दिन अल्लाह उसके दोषों को छुपाएगा।" [190] [सहीह बुख़ारी]

📞 0800 000 000 📞 0800 000 000

📞 0800 000 000: <https://www.0-00000.000/00/00/0000/78/>

📞 0800 000 000: <https://www.0-00000.000/00/00/0000/78/>

📞 0800 000 3100 📞 00 000 2026 03:37:09 📞